A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

संगीत दामोदर ग्रन्थ का परिचय

Kavita Verma
Research Scholar, Indira Kala Sangit Vishwavidyalaya, Khairagarh

Read the Article Online

Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Verma, K. (2026). Sangeet Damodar Granth Ka Parichay. Swar Sindhu, 14(1), 91-93.

सार

भारतीय संगीत परम्परा का मूल स्रोत वेदों में निहित है तथा वैदिक काल से ही संगीत शिक्षा भारतीय ज्ञान परम्परा का अभिन्न अंग रही है। प्रस्तुत शोधपत्र में संगीत-दामोदर नामक मध्यकालीन संगीतशास्त्रीय ग्रन्थ का विश्लेषण किया गया है, जो संगीत, नृत्य एवं नाट्य के समन्वित स्वरूप को प्रस्तुत करता है। यह ग्रन्थ पाँच स्तवकों में विभाजित है, जिसमें भाव, रस, नायिका-भेद, नाद, स्वर, ग्राम, मूर्छना, राग, ताल तथा वाद्य आदि का विस्तृत विवेचन मिलता है। ग्रन्थकार शुभंकर ने नाट्यशास्त्र, संगीत-रत्नाकर तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों के सिद्धान्तों का संग्रह एवं समन्वय करते हुए उन्हें सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत किया है। यद्यपि विषयों का क्रमबद्ध विन्यास पूर्णतः व्यवस्थित नहीं है और नाट्य एवं संगीत का मिश्रण देखा जाता है, तथापि यह ग्रन्थ अपने व्यापक दृष्टिकोण एवं सरल शैली के कारण अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है ।यह ग्रन्थ न केवल भारतीय संगीतशास्त्र के सिद्धान्तों का संकलन है, बल्कि यह वैष्णव दृष्टिकोण से संगीत एवं नाट्य की उत्पत्ति का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अतः संगीत-दामोदर भारतीय संगीत के ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

संकेताक्षर - संगीत-दामोदर, भारतीय संगीतशास्त्र, नाट्यशास्त्र, राग, ताल, नाद, स्वर, रस-भाव, नायिका-भेद, वाद्य, मध्यकालीन ग्रन्थ, शुभंकर

भूमिका

भारतीय परम्परा में समस्त कलाओं एवं विद्याओं को वेदों से जोड़कर देखा गया है अस्तु जितना प्राचीन हमारा वेद उतना ही प्राचीन संगीत है। वैदिक काल से ही संगीत शिक्षा, भारतीय शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग रहा है जिसका उदाहरण हमें प्राचीन शिक्षा ग्रंथों में देखने को मिलता है। संगीत के शिक्षण के उद्देश्य से समय-समय पर विभिन्न संगीत ग्रंथों की रचना भी की गई हैं। नाट्यशास्त्र, वैदिक संगीत के अतिरिक्त लौकिक संगीत का सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ है। नाट्यशास्त्र में उल्लेखित संगीत के मूल सिद्धांतों को देखकर यह कहा जा सकता है कि ईसा के कई सदियों पूर्व भारत में संगीत के प्रयोग एवं शास्त्र का विकास हो चुका था। भारतीय संगीतशास्त्र के मुख्य ग्रंथों में सबसे पहले सामग्री नाट्यशास्त्र में ही उपलब्ध है। नाट्यशास्त्र, मूलतः नाट्य का ग्रन्थ होने के कारण उसमें संगीत का उल्लेख नाट्य के एक अंग के रूप में हुआ है। नाट्य से स्वतंत्र संगीत के निरूपण की दृष्टि से मतंग का बृहद्देशी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

भारतीय संगीत पर संस्कृत के अतिरिक्त अन्य अनेक भाषाओं में ग्रन्थों का प्रतिपादन यहाँ की समृद्ध संगीतशास्त्र परम्परा को दर्शाती है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में दत्तिलम, भरतभाष्य, संगीतरत्नाकर, संगीतराज, संगीत चूड़ामणि, संगीत दामोदर, स्वरमेल कलानिधि, चतुर्दंडीप्रकाशिका, संगीत पारिजात इत्यादि अनेक ग्रन्थ संगीत के क्षेत्र में विशेष स्थान रखते हैं, इनमें से कुछ प्राचीन ग्राम-मूर्च्छना प्रणाली के ग्रन्थ हैं तथा कुछ मेल सिद्धांत पर आधारित हैं। विद्वानों ने समय-समय पर अधिकांश ग्रंथों का अध्ययन कर उसकी सांगीतिक उपयोगिता को सिद्ध किया है तथापि कुछ ग्रन्थ अभी भी शेष हैं जो अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इसी तारतम्य में बंगाल में अत्यंत लोकप्रिय संगीत-दामोदर, एक प्रामाणिक ग्रंथ है।

संगीत दामोदर पांच स्तवकों में विभक्त, संगीत एवं नाट्य से सम्बंधित ग्रन्थ है। ग्रन्थकार के अनुसार उन्होंने संगीतकल्पवल्ली, संगीतशेखर, नाट्यालोचन, संगीतकलावक्ष, दशरूपक, नाट्यदर्पण, संगीतचूड़ामणि, संगीतरत्नाकर तथा नाट्यशास्त्र से नाट्य एवं संगीत के सारतत्त्व को ग्रहण कर इस ग्रन्थ की रचना की है। ग्रन्थ के अवलोकन से यह प्रतीत होता है कि उक्त ग्रन्थों में प्रतिपादित सिद्धान्तों का यहां यथावत ग्रहण किया गया है। अतः संगीत दामोदर को एक संग्रह ग्रन्थ कहना उपयुक्त प्रतीत होता है। यह सब होते हुए भी शुभंकर ने सरलभाषा में बोधगम्य सिद्धान्त को

प्रतिपादित किया है। अतः सारसंग्रह होते हुए भी यह ग्रन्थ यथास्थान मौलिक होने के साथ संगीत के जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी भी है। ग्रन्थकार ने कहा है-

यद्यस्ति संगीतसरोजिनीनां मधुप्रवाहेषु पियासुभावः।

पिपासवः केशवकेलिरंग संगीतदामोदरमाद्रियध्वम्॥

संगीतदामोदर को पांच स्तवकों में विभक्त किया गया है परन्तु इसमें प्रतिपादित विषयवस्तु सुव्यवस्थित नहीं है। संगीत एवं नाट्य सम्बन्धित विषयों का अलग-अलग निरूपण न करते हुए ग्रन्थकार ने विषय-वस्तुओं मिश्रण कर दिया है। ग्रन्थ का आरम्भ भावनिरूपण से हुए प्रथम स्तवक में स्थायीभाव, व्यभिचारिणी, सात्विकभाव, हाव, अनुभाव, नायक-नायिका मनोदशा, विभाव आदि का समावेश है। ष्न भावेन बिना जगत्, रसान् भावयन्तीति भावाः ष्इत्यादि भाव के महत्त्व एवं लक्षण को स्पष्ट करते हुए नौ स्थायिभावों, तैतीस संचारिभावों तथा आठ सात्विकभावों के सामान्य लक्षण प्रस्तुत किये है। स्थायिभावों द्वारा निष्पन्न होने वाले रसों के नामों का उल्लेख तो है, किन्तु न तो यहां स्थायिभावों के लक्षण दिये है न ही रस प्रक्रिया का निरूपण है। सात्विक भावों नामों का उल्लेख मात्र है किन्तु संचारिभावों का स्पष्ट लक्षण निर्दिष्ट है। हेलादि चतुर्दश हावों एवं कटाक्षादि अनेक अनुभावों के लक्षणों का निरूपण करके अभिसारिकाओं के अभिसरणकाल, नायिकानायकों की दो मतों के अनुसार दश कामदशायें, संकेतस्थान दूती, आलम्बन एवं उद्दीपन विभावों का लक्षण सहित वर्णन किया गया है।

नायिका, सखी, नायक, नाद, गीत, सालगसूड, ध्रुवक, मंडक, निशारुक, रस, प्रतिताल, एकताल, गति, झूमरी, संकीर्ण सूड आदि विषयवस्तु से सम्बंधित इस अध्याय का आरम्भ नायिका भेद से करते हुए शुभंकर ने पांच प्रकार की मुग्धा, चार प्रकार की मध्या, सात प्रकार की प्रगल्भा नायिकाओं तथा अवस्था भेद से आठ प्रकार की खण्डिता आदि नायिकाओं के सरल लक्षण बताये हैं। इन भेदों को स्वकीया परकीया आदि तीन भेदों से मिश्रित करके कुल तीन सौ चौरासी नायिका भेदों का उल्लेख किया गया है। अन्त में अभिसारिका के कुलजादि तीन भेद तथा कृष्णा और शुक्ला आदि मेदों का निरूपण है। इस प्रसंग में सहजा परजा आदि तीन प्रकार की सखियां तथा मतान्तर में वृद्धा सखी का लक्षण भी दिया है। नायक भेद के प्रसंग में शुभंकर ने केवल अनुकूल, शठ, पृष्ट और दक्षिण इन चार श्रृंगारनायकों के लक्षण दिये है।

उक्त नाट्य विषयों के निरूपण के बाद द्वितीय स्तवक के उत्तरार्थ में विशुद्ध रूप से संगीत के तत्त्वों का विवेचन किया गया है। इनमें नादनिरुक्ति, नादोत्पत्तिप्रक्रिया, गीतलक्षण, संगीतलक्षण, गीत प्रशंसा, शुद्ध शालग तथा मिश्र भेद से तीन प्रकार के गीत, बीस प्रकार के शुद्ध सूड, एला आदि शुद्धसूडों षडंगों का निरूपण किया गया है। गीत से सम्बद्ध अन्य विषयों का ज्ञान भरतसंहिता से करने का निर्देश देते हुए द्वितीय स्तवक पूर्ण किया गया है।

स्वर, स्वरप्रस्तार, गमक, गीत गण, मूर्छना, वर्ग, तान, ग्राम, राग, ताल एवं प्रस्तार, प्लुत आदि पारिभाषिक शब्दावलियों का शास्त्रीय विवेचन करते हुए तृतीय स्तवक में कम्पित आदि सप्तगमकों का प्रतिपादन किया है। तदनन्तर गण, 21 मूर्छनायें कवर्गादि के देवता तथा उनका फल, सप्तस्वरों से उद्भूत होने वाली 49 तानें, षड्जाति तीन ग्राम, उनकी मूर्छनाओं की व्याख्या के अनन्तर रागलक्षण, अंग-बंगादि देशों में प्रचलित भैरवादि छः रागों तथा प्रत्येक की पांच-पांच रागिनियों के नामों का उल्लेख है। राग निरूपण के पश्चात् गीत में पादों की संख्या का निरूपण करके, एक सी एक तालों में से मुख्य प्रचलित साठ तालों के स्वरूप लक्षण प्रतिपादित किये गये है। अन्त में ताल प्रस्तार एवं प्लुत आदि का वर्णन करते हुए स्तबक का समापन तालात्मक हरि के स्वरूप वर्णन के साथ किया गया है।

इसके उपरान्त चतुर्थ स्तवक के अंतर्गत श्रुति, नायक सचिव, कला, वाद्य एवं उसके प्रकार, नाद, प्रहर, मात्र, अंग,शिर, कर, हस्त एवं भेद, कटि, उपांग, प्रत्यंग. चारी, नृत्य, नाट्योत्पत्ति, नाट्यफल, रंगविन्यास, जर्जरपूजा, मसी, हरिताल ग्रहण, पूर्वरंग, सूत्रधार, प्रवेशक, अर्थप्रकृति, वृत्ति, भाषा, विभाषा, नाट्यालंकार, नृत्यरत्न क्षत्रमाला, नाटक लक्षण, प्रकरण लक्षण, व्यायोग लक्षण,अंक लक्षण, डिम लक्षण, ईहा मृग्लक्षण, प्रहसनलक्षण, भाणलक्षण, समवकार लक्षण, वीथिलक्षण, नाटिका लक्षण, प्रेक्षण लक्षण, गोष्टी लक्षण, संलापक लक्षण, काव्यलक्षण. मुखलक्षण, गर्भलक्षण आदि का वर्णन है। पंचम एवं अंतिम स्तवक में गायनदोष, अतलय, लय, रस-श्रृंगार करुण आदि का उल्लेख मिलता है।

इस स्तवक में संगीत एवं नाट्य से सम्बन्धित विषयों का मिश्रित रूप से निरूपण है। स्तवक का आरम्भ 22 श्रुतियों तथा उनसे स्वरूप प्राप्त करने वाले सात स्वरों के वर्णन से किया गया है। श्रुति निरूपण के उपरान्त नाट्य से सम्बन्धित विदूषक आदि नायक के सचिवों के लक्षण, कर्तव्यों के विषय में बताया गया है। इसके पश्चात् वाद्यों का विस्तार से वर्णन किया गया है। शुभंकर के अनुसार गीत ताल से शोभित होता है। ताल वाद्य से

संभव होता है। अतः संगीत में वाद्य का विशेष महत्त्व है। तत, सुषिर, आनद्ध और घन भेद से वाद्य चार प्रकार के होते है। तन्त्रीगत वाद्य तत, वंशादि सुषिर, चर्मावनद्ध आनद्ध तथा काँस्यादि निर्मित वाद्य तालादि घन कहे गये है।

वाद्य निरूपण के पश्चात शुभंकर ने नाट्य से सम्बन्धित प्रमुख विषय अंगहारों का विस्तार से वर्णन किया है। तदनन्तर अष्टोत्तरशत करण, भ्रमरपाद आदि दशभीममण्डल, दण्डपाद आदि दश आकाशमण्डल तथा अपराजित आदि सोलह अंगहारों का लक्षणों के साथ बताया गया है । शुभंकर ने नृत्य का लक्षण करते हुए कहा है कि देशरुचि के और रसावित विलासमुक्त अंग विक्षेप को नृत्य कहा जाता है। इसके ताण्डव और लास्य मुख्य दो भेद बताये हैं। इन सब नृत्यों के प्रतिपादन कर नाट्योत्पत्ति, नाट्यफल, रंग विन्यास, जर्जर पूजा, मसीग्रहणमन्त्र, निर्माण विधि, पूर्वरंग, नान्दी, सूत्रधार, प्रस्तावना, विष्कम्भक, प्रवेशक, अर्थप्रकृति, कृति आदि नाट्य से सम्बन्धित विषयों का निरूपण करके पुनः लास्य के अंगों की व्याख्या की गई है । गायन दोष, स्थायी संचारी आदि चार आलप्तियों, हृदिस्थिति आदि तीन लयों तथा मतान्तर से चालीस आलप्तियों के नामों की गणना के पश्चात् विस्तार से रस का निरूपण है पंचम स्तवक में किया है। रसों के नौ स्थायी भावों, शंकर के मुखों से उनकी उत्पत्ति आदि के निर्देश करके प्रत्येक रस के वर्ण, देवता आदि का प्रतिपादन भी किया गया है। रसनिष्पत्ति के विषय में इन्होंने पूर्वाचार्यों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का ही अनुसरण एवं समर्थन किया है।

उपसंहार

संगीत और नाट्यशास्त्र को कृष्ण से उत्पन्न बताने का उनका प्रयास अनोखा है, क्योंकि भरत के समय से ही संगीत और नाटक की उत्पत्ति भगवान शिव से मानी जाती थी। यह भी उनके वैष्णव धर्म की ओर झुकाव को प्रमाणित करता है। शुभंकर ने अपने एक अन्य ग्रंथ हस्त-मुक्तावली का उल्लेख संगीतदामोदर में कई बार किया है। यह स्पष्ट रूप से उनकी पहले की रचना है और यह मुख्यतः चित्राभिनय पर आधारित प्रतीत होती है, जिसमें हाथ और उँगलियों की मुद्राओं से अभिनय किया जाता है।संगीत-दामोदर एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें संगीत, नृत्य और नाटक के विविध विषयों पर चर्चा की गई है। यह ग्रंथ पाँच अध्यायों (स्तवक) में विभाजित है, लेकिन अध्यायों के विभाजन का कोई स्पष्ट सिद्धांत नहीं है, जिससे विषयों की व्यवस्था कुछ असंगठित और बिखरी हुई प्रतीत होती है । संगीत-दामोदर प्राचीन संगीत और नाट्यशास्त्र पर आधारित पुस्तकों का संग्रह है। शुभंकर ने स्वयं उन विभिन्न स्रोत ग्रंथों का उल्लेख किया है जिनसे उन्होंने अपने ग्रंथ की सामग्री ली है। पहले अध्याय में उल्लिखित स्रोत ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं - संगीत-कल्पवल्ली, संगीत-शेखर, नाट्यालोचन, संगीत-कल्पवृक्ष, दशरूपक, नाट्यदर्पण, संगीत-चूड़ामणि, रत्नकोष, संगीत-रत्नाकर, शारदा (तनय) और अंत में भरत । इनके अतिरिक्त उन्होंने काव्यशास्त्र के अन्य स्रोतों से भी सामग्री ली है, जैसे - काव्यप्रकाश, साहित्य-दर्पण, सरस्वती-कंठाभरण, अलंकार-शेखर, श्रृंगार-तिलक, रसार्णव-सुधाकर, मंदर-मरंदचंपू, मालतीमाधव-टीका और अन्य। हालांकि, उन्होंने इन सभी का नाम विशेष रूप से नहीं दिया है, लेकिन डॉ. गौरिनाथ शास्त्री द्वारा संगीत-दामोदर के संपादन में उद्धृत समान अंश स्पष्ट रूप से यह दिखाते हैं कि शुभंकर ने इन ग्रंथों की पंक्तियाँ यथानुसार अथवा बिना कोई संशोधन के अपने ग्रन्थ में सम्मिलित की है। चतुर्थ स्तवक में उन्होंने अनेक रूपक और उपरूपकों का उल्लेख किया है और पंचम स्तवक में भालुकी नामक रस के एक विद्वान का संदर्भ दिया है, जिनका नाम मात्र ही जाना जाता है। शुभंकर द्वारा पाणिनि के सूत्र और उज्ज्वलदत्त की उणादि-सूत्रों पर टीका का उल्लेख उनके नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, व्याकरण और नाटकों के क्षेत्र में गहन विद्वत्ता को दर्शाता है। इस प्रकार, उनका ग्रंथ संगीत और नाट्यशास्त्र के लगभग सभी संबंधित विषयों का अद्भुत संग्रह है। यही कारण है कि संगीत-दामोदर बंगाल में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ और इसे प्रामाणिक ग्रंथ माना गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शुभंकर, संगीत दामोदर संस्कृत कालेज कलकत्ता -1960
शुभंकर, संगीत दामोदर, हिन्दी अनुवाद- डॉ. हरिराम आचार्य शीतल प्रेस जयपुर
गुप्ता, प्रो. लिपिकादास, भारतीय संगीतशास्त्र ग्रन्थ परम्परा, काशी हिन्दू वि.वि. वाराणसी, पृ.क्र. 138.144